अन्तरानुशासनात्मक अनुसंधान का महत्व

प्रा. डॉ. बी. आर. नळे
हिंदी विभाग,
सुंदरराव सोळंके महाविद्यालय,
माजलगाव.

सारांश : सामान्यत: समस्या से समाधन तक पहुँचने के लिए विषय विशेष के बारे में बोधपूर्ण तथ्यात्मक समग्री संकलन करके सुक्ष्मतर विवेचन-विश्लेषण के सहारे नए तथ्यों, नए सिद्धांतों और मान्यताओं की स्थापना करनेवाली प्रक्रिया अथवा कार्य को हम शोध या अनुसंधान कहते है. जिसके द्वारा ज्ञात साहित्य का पूर्नमूल्यांकन करते हुए विस्मृत तत्वों को बढावा देकर तथा नवीन तत्वों को उसके साथ जोडकर ज्ञान की सीमाओं का निरंतर विकास किया जाता है. इस प्रकार ज्ञान की सीमाओं का विस्तार करना सभी प्रकार के अनुसंधानों का लक्ष होता है. इस प्रकार का ज्ञान अखंड और अविभाज्य होता है. जिसके सहारे मनुष्य तथा जीव-सृष्टि का संपूर्ण क्षमता के साथ हम विकास कर सकते है. ऐसे अखंड और अविभाज्य ज्ञान को मानव समाज ने अध्ययन, अध्यापन और आकलन की सुविधा के लिए अनेक ज्ञान की शाखओं में विभाजित करना शुरू किया. जिसके चलते आज हमारे सामने ज्ञान की अनेक शाखाएँ विकसित हो गई है. आज ऐसी अलग अलग ज्ञान की शाखाओं के अंतर्गत अनुसंधान होने लगा है. जिसमे ज्ञान का विस्तार अपनी अपनी शाखाओं के अंतर्गत हो रहा है. वर्तमान में इस प्रकार के अनुसंधान से किसी क्षेत्र विशेष या अंग का विकास तो हो सकता है, किन्तु मनुष्य तथा जीव-सृष्टि का नहीं. क्योंकि इनका विकास आज ज्ञान की किसी एक शाखा विशेष से नहीं तो ज्ञान की अनेक शाखाओं के साथ जुडा है. जो अखंड और अविभाज्य ज्ञान के विस्तार का प्रतिनिधित्व करता है.

बीज शब्द : तथ्यात्मक समग्री, अनुसंधान, अन्तरानुशासनात्मक अनुसंधान.

अर्थ : ऐसे अखंड और अविभाज्य ज्ञान के अभाव में हानेवाले मनुष्य के वर्तन ने आज मानव जीवन की शांति, प्रेम, सौहार्द एवं संवाद जौसे अनेक मानवीय गुणों में दरारें

निर्माण करना शुरू किया है. आज मानव में आयी संवेदनहीनता, क्रुरता और पाश्विकता को हम उसके अलोक में देख सकते है. साथ ही जनकल्यान एवं सामाजिक सुव्यवस्था की धज्जियां, अन्न-वस्त्र-आवास की समस्या, जनसंख्या विस्फोट, अपराधिक जगत का विस्तार, प्रकृति और पर्यावरणीय समस्याओं को भी हम इसके अलोक में देख सकते है. वर्तमान में मनुष्य की सोच, वर्तन, व्यवहार और कार्य अखंड ज्ञान के अभाव से प्रभावित है. उसमें सुधार लाने तथा वर्तमान की समस्याओं को निपटाने के लिए हमें एक से अधिक ज्ञान की शाखओं में अनुसंधान करने की आवश्यकता है. इस प्रकार की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए अन्तरानुशासनात्मक अनुसंधान पद्धति को विकसित किया है. प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से ऐसे एक से अधिक ज्ञान की शाखओं का अध्ययन करनेवाली अन्तरानुशासनात्मक अनुसंधान पद्धति पर विचार किया है.

अंतरानुशासनात्मक अनुसंधान में ज्ञान की भिन्न भिन्न शाखओं के बीच एक साथ अध्ययन करते हुए समस्याओं का समाधान ढूँढने का प्रयास किया जाता है. अन्य प्रकार के अनुसंधानों में विषय वस्तु के आलोक में समस्याओं का समाधान ढूँढने का प्रयास किया जाता है. जिसमें समस्या को न्याय देने की बजाय विषय वस्तु को न्याय देने का प्रयास होता है. हमें एक बात हमेंशा याद रखनी चाहिए कि, हम कभी भी किसी भी समस्या को किसी एक विषय के दायरे में न तो बांध सकते है, न उसका उत्तर ढूँढ सकते है. ऐसे में किया गया प्रयास बांझ की तरह बेकार ही साबित हो सकता है. अन्तरानुशासनात्मक अनुसंधान पद्धति उसके लिए नया विकल्प लेकर हमारे सामने आती है. इस पध्दति के अंतर्गत समस्याओं के अध्ययन और उसके समाधान पर बल दिया जाता है. विचाराधिन समस्या को जिस किसी ज्ञान शाख से सुलझाया जा सकता है, उसके अध्ययन को यह पद्धति प्रधानता देती है. उदा. प्रेमचंद के गोदान में चित्रीत कृषक जीवन की समस्याओं का अध्ययन कृषि विज्ञान, समाज विज्ञान, मनोविज्ञान, अध्यात्म, धर्मशास्त्र, भ्ूगोल और पर्यावरण आदि घटकों के दायरे में आ जाता है. तो होरी के व्यवहारों का अध्ययन अनुवंशशास्त्र, मनोविज्ञान, परिस्थितिकी विज्ञान, राजनीतिशास्त्र, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र आदि घटकों के दायरे में आ जाता है. अन्तरानुशासनात्मक अनुसंधान के अंतर्गत ज्ञान की इन सभी शाखओं का अध्ययन करके तथ्यों को तलाशने और उसकी पुष्टि का प्रयास होता है.

अन्तरानुशासनात्मक अनुसंधान के अंतर्गत ज्ञान की अनेक शाखाओं से प्राप्त सुचनाओं, तकनीकी पद्धतियों, उपकरणों, विचारधाराओं, अवधारणओं और सिध्दांतों के सहारे हम ज्ञान का विस्तार भी कर सकते है और समस्याओं का समाधान भी ढँूढ सकते है. साथ ही हम व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और विश्व समुदाय के विकास, प्रगति और उन्नत्ति के लिए नए विकल्प भी प्रस्तुत कर सकते है. जीव-सृष्टि, प्रकृति, पर्यावरण आदि के बीच समन्वय और संतुलण से पोषित नयीं जीवन शौली को विकसित कर सकते है. इस तरह की तमाम संभावनाओं को लेकर यह अनुसंधान पध्दति हमारे सामने आयी है. इन्हीं संभावनाओं को देखते हुए शिक्षा के क्षेत्र में इस प्रकार के अनुसंधान पर बल दिया जा रहा है.

अन्तरानुशासनात्मक अनुसंधान आधुनिक युग की आवश्यकता ही नहीं तो हमारी अनिवार्यता बन गई है. आज मनुष्य का संम्पर्क प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष ज्ञान की अनेक शाखा और क्षेत्रों के साथ आने लगा है. इन शाखओं के सहारे वह जीवन व्यवहार की सूक्ष्मताओं को समझने लगा है. उसी के द्वारा मनुष्य की सोच, वर्तन, व्यवहार और कार्य एक ओर नियंत्रीत होने लगे है, तो दुसरी ओर प्रेरित. उसके नियंत्रण और प्रेरणा ने आज की समस्याओं को जन्म देना शुरू किया है. जिसका चित्र साहित्य, कला, संस्कृति आदि के माध्यम से हमारे सामने आने लगा है. साहित्य अखण्डता का वाहक होता है. जिसके चलते साहित्य, कला, संस्कृति, अध्यात्म, दर्शन आदि से संबंधित शोध की दिशाएं व्यापक और बहुआयामी हो गयी है. ऐसे में कार्यकारण संबंधों के सहारे मूल ज्ञान की प्राप्ति और तथ्यों की पुष्टि के लिए चिंतन की यह नई अनुसंधान की पद्धति वौज्ञानिक आधार प्रस्तुत करती है. जिसके सहारे हम मनुष्य की सोच, प्रकृति, व्यवहार, स्वभाव और योग्यता आदि को ज्ञान की अनेक शाखाओं के बीच कार्यकारण संबंधों के अधार पर तलाश सकते है. इसके माध्यम से हम ज्ञान की शाखओं का विस्तार करने के साथ साथ समाज की सोच को भी नई दिशा दे सकते है. वर्तमान की समस्याओं को निपटा सकते है.

आज ज्ञान प्राप्ति के अनेक विकल्प हमारे सामने उपलब्ध है. किन्तु हमें हमेंशा याद रखना चाहिए कि, अलग अलग शाखओं में विभाजित ज्ञान हमेंशा एक-दूसरे पर

निर्भर होता है. उनमें पारस्पारिकता का धागा दिखाई देता है. ज्ञान की शाखाओं के अंतर्गत होनेवाला अनुसंधान इस धागे को पकड नहीं पाता. परिणामत: ज्ञान के विस्तार और उसकी उपयुक्तता पर प्रश्न-चिन्ह अंकित होने लगता है. आज हम देखते है कि, साहित्य के अंतर्गत अनुसंधान तो हो रहें है, लेकिन उसके अंतर्गत होनेवाले ज्ञान के विस्तार और उपयुक्तता को लेकर प्रश्न-चिन्ह अंकित होने लगे है. बेकार साबित होने लगे है. ऐसे में अन्तरानुशासनात्मक अनुसंधान की पद्धति आशा का नया किरण लेकर हमारे सामने आयी है. इस प्रकार का अनुसंधान एक ओर ज्ञान की शाखओं को भी नया रूप देने लगा है, तो दूसरी ओर नए ज्ञान को भी जन्म दे रहा है. जिसकी जीव-सृष्टि, प्रकृति और पर्यावरण के विकास के लिए आवश्यकता है. इस कारण हमें उसका खुले दिल से स्वागत करना चाहिए.

एक समय था कि, हम भौगोलिक विविधता और भाषिक सीमाओं के कारण अन्तरानुशासनात्मक अनुसंधान से दूर भागते थे. लेकिन आज अनुवाद की वजह से भाषा ज्ञान प्राप्त करना तो आसान हुआ ही है. साथ ही इसने प्रान्तीय-राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय संवाद को भी आसान बनाया है. अनुवाद ने आज ज्ञान के बीच की सभी सीमाओं को पाटने का काम किया है. इसके सहारे आज हम अन्तर्भाष्कि और अन्तरानुशासनिक विषय बोध एवं स्थानिय जीवन मूल्य की जानकारी को प्राप्त करते हुए हर समस्या का उचित समाधान ढूँढ सकते है.

अत: निष्कर्ष रूप में हम कह सकते है कि, मानव का संबंध प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष ज्ञान की अनेक शाखाओं से आने लगा है. साथ ही उसकी सोच, वर्तन, व्यवहार और कार्य ज्ञान की अनेक शाखाओं से प्रेरित और नियंत्रीत होने लगा है. जिसके चलते वर्तमान की अनेक समस्याएँ निर्माण हुई है. साहित्य इन सभी का वाहक है. इस कारण साहित्य के अंतर्गत मनुष्य की सोच, वर्तन, व्यवहार और कार्यों को तलाशने, उसमें सुधार लाने तथा वर्तमान के प्रश्नों के समाधान ढूँढने के लिए हमें अन्तरानुशासनात्मक अनुसंधान पद्धति को अपनाने की आवश्यकता है.

सहायक ग्रंथ :

1. डा. राम गोपाल शर्मा दिनकर, अनुसंधान : स्वरूप एवं प्रविधि, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर.
2. संपा. डा. सावित्री सिन्हा / डा.विजयेन्द्र स्नातक, अनुसंधान की प्रक्रिया, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली.
3. एम. एन. गणेशन, अनुसंधान प्रविधि सिध्दांत और प्रक्रिया, लोकभारती प्रकाशन.
4. देव शंकर नवीन, http://deoshankarnavin.blogspot.com/2017/01/blog_post.html